राहुल शिवाय

प्रगति की राह में अब भी अगर जंगल नहीं होगा
तो कल की पीढ़ियों के हिस्से में भी कल नहीं होगा

दिमाग़ी कसरतों से वाह-वाही लूट लेंगे हम
मगर ऐसी ग़ज़ल से कोई भी विह्वल नहीं होगा

सँभलना, सामने बाज़ार आदमखोर जैसा है
कि जिनकी आस्थाओं में कोई मंगल नहीं होगा

किसी को घिसने से वो पैना तो हो सकता है लेकिन
महक होगी नहीं उसमें कि जो संदल नहीं होगा

कोई हल ज़िन्दगी में पा नहीं सकते समस्या का
हमारी कोशिशों के काँधे पे गर हल नहीं होगा

अभी इस क्वार में भी हल्कू का तन थरथराता है
वो जब भी सोचता है पूस में कंबल नहीं होगा

अभी तो गाँव से बरगद ही ग़ायब हैं हुए 'राहुल'
वो दिन भी आएँगे जब घर में तुलसीदल नहीं होगा

के० पी० अनमोल

एक दरिया की समूची ही रवानी क़ैद है
दो किनारों में मेरी आँखों का पानी क़ैद है

ये जहाँ पाबंदियों का जाल है, इस जाल में
उम्र का लंबा सफ़र समझो कि जानी क़ैद है

कल फ़रिश्तों में अजब-सी हलचलें देखी गयीं
क्या ज़मीं पर कोई बंदा आसमानी क़ैद है!

जन्म-जन्मों आने-जाने की कहानी कुछ नहीं
बात इतनी है कि दुनिया इक पुरानी क़ैद है

ज़िंदगी को जेल कहने वालों को बतलाइए
साथ उसका ख़ूबसूरत और सुहानी क़ैद है

उस जगह हालात होंगे क्या ज़रा ये सोचिए
जिस जगह पर हाकिमों की मेहरबानी क़ैद है

जो हमारे दौर में पसरी हुई है हर तरफ
वो ख़ामोशी भी तो जैसे इक ज़ुबानी क़ैद है

वो अभी तक हो नहीं पाया फ़रिश्तों की तरह
इसलिए अनमोल दुनिया में है, यानी क़ैद है

ISSN:2583-8849